प्रिंट मीडिया में महिलाओं की भूमिका('यमदीप' उपन्यास के संदर्भ में)

प्रा.श्रीदेवी बबन वाघमारे सहाय्यक प्राध्यापक,हिंदी विभाग कमला कॉलेज, कोल्हापुर (स्वायत्त)

ई-मेल – shrideviwaghamare1993@gmail.com

प्रस्तावना :

पत्रकारिता लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता है। लोकतंत्र को मजबूत बनाने और उसे कमजोर करने का काम भी पत्रकारिता ही करती है।आज का युग प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के इर्द-गिर्द घूमता दिखाई देता है। सूचनाओं का आदान-प्रदान करने हेतु मनुष्य इसी का प्रयोग करता है। 21 वीं सदी में मीडिया के क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका बढती हुई दिखायी देती है| आज महिलाएं सभी क्षेत्र में आगे बढती हुई दिखाई देती है। इस क्षेत्र में महिलाओं को पुरुषों के समान ही कठिनाइयों और खतरों का सामना करना पड़ता है और इसके अलावा उन्हें लैंगिक असमानताओं, सुरक्षा मुद्दों या कम प्रतिनिधित्व का भी अनुभव होता है। आज का युग मीडिया का युग है। वर्तमान में सूचना के साधनों में अत्यधिक वृद्धि हुई है। इसलिए आज के युग को 'सूचना प्रौद्योगिकी' भी कहा जाता है। सूचना और विचारों को पाठकों तक पहुंचना यह मीडिया का उद्देश्य होता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु मीडिया विभिन्न भाषाओं को अपनाकर आगे बढ़ रही है।मीडिया के क्षेत्र में आज महिलाओं की साझेदारी भी बढ़ रही है। महिलाएं भी इस मीडिया के माध्यम से अपनी अस्तित्व की तलाश करते हुए दिखाई दे रही है न्यूज़ रिपोर्टर, न्यूज़ एंकर, स्तंभ लेखक, संपादक, छायाचित्रकार या टेक्नीशियन आदि जगह पर महिलाएं काम करती दिखाई दे रही है।

'यमदीप' उपन्यास में प्रिंट मीडिया में काम करती मानवी पाठक के दिल को छू लेती है| 'यमदीप' उपन्यास हिंदी का पहला उपन्यास है जो किन्नर समाज पर लिखा गया है। इस उपन्यास के दो प्रमुख पात्र हमें दिखा देते हैं। किन्नर समाज का प्रतिनिधित्व करती नाजबीबी और स्त्री समाज का प्रतिनिधित्व करती मानवी। दोनों भी अपने जीवन में आ रही परेशानियों से लड़ रही हैं। दोनों भी अपने अस्तित्व खोजने की लड़ाई लड़ रहीं हैं। मानवी दैनिक अखबार में काम करती है उसे अखबार के साप्ताहिक फीचर 'आदिशक्ति' स्तंभ की संपादक है| महिलाओं की समस्याओं और उनके उन्नति के लिए मानवी का व्यक्तित्व पूरे शहर में एक विशिष्ट पहचान बनाया हुआ है। नए-नए तथ्यों और विषयों पर लिखे हुए फीचर पाठकों में लोकप्रिय है पाठक को साप्ताहिक फीचर पढ़ने के लिए उत्सुक होते हैं। सबसे ज्यादा चिट्ठी और फोन इस फीचर के लिए ही आते हैं। मानवी अपने फीचर्स स्तंभ में 'आकाश की चाहत' फीचर में महिलाओं पर हो रहे अत्याचार, अन्याय, पुरुष मानसिकता एवं पुलिस विभाग में कार्य करती महिलाओं का शोषण आदि विषय पर बातचीत करती। है यह लिखते वक्त वह सावधानी बरतती है कि – "जरा सावधानी से नहीं तो अर्थ का अनर्थ हो जाएगा। एक-एक व्यक्ति का इंटरव्यू एक-एक ज्वालामुखी है। जरा सी लापरवाही से फट जाएगा"[1]

मानवी समाज में चल रहे भ्रष्टाचार, स्त्रियों से बलात्कार, मुस्लिम महिलाओं पर हो रहें अत्याचार, यौन शोषण, महिला सहकर्मी के साथ हो रहे व्यवहार आदि सभी बातों को अपने आदिशक्ति स्तंभ में फीचर के माध्यम से लेखन करती हुई दिखाई देती है और इन सभी बातों का लेखन बेबाक पद्धति से करती है वह अपनी टिप्पणी भी देती है कि जो समाज को सोच-विचार करने के लिए मजबूर कर देती है, वह कहती है – "आखिर कैसे होगी नारी मात्रा की सोच ऊँची? अशिक्षा के अंधेरे में रहते हुए यह संभव है क्या? सह-अस्तित्व को स्वीकार किए बिना उन्हें उनका अधिकार मिल पाना आसान है क्या? आजाद देश की इन प्रतिबंधित नारियों को किस तरह मिल सकेगा उन्मुक्त आकाश, जहां उनकी महत्वकांक्षाओं का पंछी उड़ान भर सकेगा? कौन देगा आकाश?"[2]

मानवी अपने इसी स्तंभ के कारण नारी उद्धार गृह जाना चाहती है। लेकिन वहां की वार्डन मिस रीता देवी उसे मिलने के लिए नहीं देती और इसी सिलसिले में वह डी.एम. ऑफिस से पत्र लेकर जाना चाहती हैं की वार्डन उसे मना ना करें। क्योंकि नारी उद्धार गृह की लड़कियों के ऊपर एक फीचर लिखना चाहती है। लेकिन वार्डन रीता देवी मना कर देती है। फिर भी मानवी रीता देवी का मत पर परिवर्तन करने हेतु कहती है कि- "पर ठुकराई गई है या अपनी किसी गलती की सजा भुगत रही है, इस बारे में मैं उनसे जानकारी नहीं लूंगी तब तक ऐसा कैसा माना जा सकता है कि वह समाज द्वारा ठुकराई गई है या तिरस्कृत हैं- फिर मेरा भी काम आप ही का है -समाजसेवा"[3] इसे पता चलता है कि मानवी किसी भी तरह के अफवाहों पर विश्वास नहीं करती पूरे तथ्य के साथ अपना कार्य करती हैं।

आगे चलकर वह नारी उद्धार गृह जाने के लिए डी.एम. आनंद कुमार से पत्र लेकर आती हैं और वहां पर आयी लड़कियों का इंटरव्यू लेतीं हैं और उसे 'आवेश का एक क्षण' फीचर द्वारा लिखती हैं। इंटरव्यू के दौरान उसे वहां आयी पूनम

की जानकारी मिलती है। तो उसके पिताजी को चिट्ठी लिखकर भेजती हैं तब पूनम के पिता राजवंशी जी उससे मिलने पहुंचते हैं। मानवी उनको समझने की कोशिश करती है-"अब बच्चों से ऐसी गलतियां हो जाए तो उन्हें क्षमा कर देना चाहिए। यह अवस्था ऐसी है की छोटी-सी बात भी तीर की तरह लगती है। और यदि सही मार्ग बताने वाला ना मिले तो कदम भटक सकते हैं"[4] फिर भी राजवंश अपनी बेटी पूनम को वापस नहीं लेकर जाते क्यूंकि समाज में लोग क्या कहेंगे? इस बात को लेकर वह अपने अपनी बेटी को घर वापस नहीं लेकर जाना चाहता। तो वह मानवी से जवाब पूछता है कि- "आप सोचती है कि आपने जो छाप दिया तो वही तस्वीर हो गई समाज की? अरे उसे तस्वीर को पलट कर भी तो देखिए"[5] मानवी उनको समझती है कि परंतु उसकी मानवीयता काम नहीं आती।

नारी उद्धार गृह के फीचर में नेता वर्ग में अलग माहौल छा जाता है तो मन्ना बाबू नाम के नेता के कार्यकर्त्ता युवक मानवी को धमकाने के लिए आते हैं और कहते हैं – "अरे मैडम दूसरों को भी जीने-खाने दीजिए। अखबार में नौकरी करने का मतलब कि आप तोप हो गई और अगला निशाना? यह ठीक नहीं हैं। आइंदा रीता देवी के पास परेशान करने मत जाइएगा और हां वो डी.एम.वी.एम लेटर भी नहीं। आप तो जानती है कि बड़े-बड़े अफसर भी मंत्रियों की जेब में रहते ।हैं समझ गई न? यह ठीक नहीं है"[6] फिर भी मानवी निडरता के साथ इन गुंडों का सामना करती हुई दिखाई देती है। मानवी को धमकियां मिलती रहती है। फिर भी वह अपना लेखन कार्य बंद नहीं करती। डी.एम. आनंद कुमार के साथ सिफारिश करके वह अपने लिए पुलिस प्रोटेक्शन भी लेती है। फिर भी राजनीतिक दबाव पर भी वह नहीं डरती और अखबार में कार्य करती रहती है। साथ ही साथ अपने परिवार के जिम्मेदारी भी उठाती है। इसी स्तंभ लेखन के लिए वह किन्नरों के गुरु मेहताब गुरु से मिलती है और उनके जीवन की पीड़ा को समझने की कोशिश करती है। उनके विचारों से वह प्रभावित हो जाती है। वहीं पर उसकी मुलाकात नाजबीबी से होती है नाज के पिता मिलिट्री में थे और वह डॉक्टर बनना चाहती थे लेकिन किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। उसका बदलता हुआ लहजा देख अपने पिता का घर छोड़ना पड़ा और वहां किन्नर समुदाय में दाखिल होना पड़ा। मानवी और नाज में भी अपने समाज का प्रतिनिधित्व करते हुए अपनी जिम्मेदारी को बखूबी से निभा रहें हैं। साथ में साथ ही समझ में बदलाव लाने की चाहत भी ही रखते हैं। मानवी जब किन्नर समाज पर फीचर लिखना चाह रही थी तभी उसके सहकर्मी उसे पर व्यंग्य और उपेक्षा से हंस पड़ते हैं और कहते हैं – "ना बाबा ना! हमें अपनी शामत नहीं बुलानी। आप महिला है। शायद तरस खा जाए सब आप पर"[7] आगे वह किन्नर किस प्रकार लिंग परिवर्तन करते हैं यह भी जानकारी देते है। तो मानवी सदमे में आ जाती है कि कैसे लोग हैं कि जहां जगह मिली वहां शुरू हो जाते हैं।

किन्नर बस्ती में जाकर मानवी की मुलाकात नाज और अन्य किन्नरों से होती है| इस समाज ने एक पगली की बच्ची पाली थी।उसका सारा खर्चा नाज उठाती थी| इसके लिए उसने गिरिया भी रखा था| एक दिन पास के डॉक्टर के कारण उस इंसानी बच्ची की जानकारी पुलिस को हो जाती है| पुलिस उनकी बस्ती में आकर मार-पीठ करती है और उस बच्ची को नारी उद्धार गृह भेजने के लिए कहते है| दिल पर पत्थर रखकर सब लोग उसे नारी उद्धार गृह छोड़ आते है और अगले ही दिन अखबार में खबर आती है कि वहां से एक लडकी गायब हुई है उसमे बड़ें नेताओं का, पुलिस कर्मियों का हाथ है| तो नाज उस जगह पर पहुँच जाती है वहां पर मानवी पहले से उपस्थित थी समाचार की जानकारी जुटाने के लिए| नाज सारी बातें मानवी को बताती है और सोना को वहां से छुड़ाने के लिए कहती है|

उसी वक्त मानवी का एक सहकर्मी आकर कहता है "चलिए जल्दी। इस समय आपको अपने फीचर के लिए और हमारे न्यूज़ के लिए अच्छा मैटर मिलेगा। अवसर अच्छा है।लाभ उठा लिया जाए"8 गार्ड ने उन्हें रोकने की पूरी कोशिश की परन्तु वह अन्दर पहुँच जाती है। वार्डेन, गार्ड और सुपर वाइजर उसे रोखने की कोशिश करते है फिर भी वहां पहुँच जाती है। तभी सभी लड़कियों को बुलाकर किसी को कुछ ना बताने का आदेश मंत्री और डी.एम. द्वारा दिए जा रहे थे| और वहां की लडकी पूनम भी गायब थी। लड़कियां बताती है कि वह मैडम के साथ गई थी लेकिन वापस नहीं आयी| बाहर का यह शोर सुनकर एस.पी बाहर आते है और मानवी को धमकने लगते है। लेकिन मानवी निडरतासे उनका सामना करती हुई दिखाई देती है और उनको सवाल पूछती है कि "पत्रकारों से मिलने के लिए मनाही और मंत्रीजी को आप स्वयं लेकर मिलाने आ रहे हैं? क्या कारण हम लोग जान सकते हैं कि इन लडकियों से मंत्रीजी क्या जाँच-पड़ताल कर रहें हैं? क्या जाँच कमेटी के वहीँ चेअरमन बनाए गए हैं?"[9]

उसी वक्त शोर सुनकर मंत्री मन्ना बाबु बहे आ जाते है और अपने सेवक संतोष और साहिब से कहते है कि " स्साली को ऐसा सबक दो कि फिर जुबान न खोल सके"[10]उसी वक्त मानवी का गला दबोच लेते हैऔर वह बेहोश हो जाती है। सिर्फ मन्ना बाबु की आवाजें उसे सुनाई देती है और आखों के सामने अँधेरा छा जाता है। मानवी जब आखें खोलती है तो वह अस्पताल में थी। उसे नाज और बाकि किन्नरों ने बचाया था और उपचार भी किए थे। उसके सहकर्मी उस स्थिति को

देखकर भाग गए थे।अपस्ताल में आकर उसे मिलते है, लेकिन कोई सहायता नहीं करता।मानवी की पूरी जिम्मेदारी नाज और किन्नरों का समूह लेता है। मानवी को यह देखकर लगता है कि यह बदलाव की पहल है। वह आनंद कुमार से फोन मिलर सभी घटना की सुचना देती है और वह चुनाव के लिए नाजबीबी को तैयार करने की बात करती है|

निष्कर्ष के रूप में मानवी अपनी पत्रकारिता पूरी ईमानदारी के साथ निभाती हुई देखायी देती है। अनेक संकटों की बावजूद भी वह अपना कार्य करती है। समाज में परिवर्तन लाने के लिए तैयार हो जाती है चाहे उसके जिन्दगी क्यूँ न दांव पर लगी हो लेकिन अपनी कलम को नहीं रोकती। नारी के विभिन्न प्रश्नों को वह पाठकों तक पहुँचाने की कोशिश करती रहती है|

संदर्भसूचि

1. नीरजा माधव- यमदीप,सामयिक प्रकाशन दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण 2017, पृ.क्र.59
2. वहीँ पृ.क्र.59
3. वहीँ पृ.क्र.54
4. वहीँ पृ.क्र.97
5. वहीँ पृ.क्र.100
6. वहीँ पृ.क्र.103
7. वहीँ पृ.क्र.159
8. वहीँ पृ.क्र.279
9. वहीँ पृ.क्र 280